मानविकी विद्याशाखा
UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल)

बी0ए0 तृतीय वर्ष
ज्योतिष

जमा करने की अन्तिम तिथि – 15 मई 2015

कोर्स शीर्षक - मेलापक एवं विवाह मुहूर्त्त विचार **कोर्स कोड – BAJY - 302**

शैक्षिक सत्र - 2014 – 15 **अधिकतम अंक – 40**

यह सत्रीय कार्य दो खण्डों में विभक्त है। खण्ड 'क' में आठ प्रश्न दिये गये है। उनमें से किन्हीं चार के उत्तर अधिकतम 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। खण्ड 'ख' में 4 प्रश्न दिये गये हैं। जिनमें से किन्हीं 2 प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

खण्ड – 'क'

1. मेलापक उद्देश्य का संक्षिप्त वर्णन कीजिये ।
2. वर्तमान समय में मेलापक का क्या महत्व है । स्वविचार कर लिखिये।
3. मेलापक विधि का उल्लेख कीजिये ।
4. वैधव्य एवं विधुर योग क्या है । समझाइये।
5. विवाह का प्रयोजन क्या है ? लिखिये ।
6. विवाह में काल निर्धारण पर टिप्पणी लिखिये ।
7. वर – कन्या वरण का संक्षिप्त परिचय दीजिये ।
8. त्रिबल शुद्धि से क्या तात्पर्य है ? स्पष्ट कीजिये।

खण्ड - 'ख'

1. विवाह मुहूर्त्त का विस्तार से उल्लेख कीजिये ।
2. विवाह में कथित दस प्रमुख दस दोषों का वर्णन कीजिये ।
3. वधूप्रवेश एवं द्विरागमन की व्याख्या कीजिये।
4. द्विरागमन किसे कहते है ? स्पष्ट कीजिये ।